



सूर्यबाला के उपन्यासों में नारी

मन्जू रानी

शोधार्थी

हिन्दी विभाग,

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,

अस्थल बोहर (रोहतक)

डॉ० रामरती (सेवानिवृत्त)

शोध निर्देशक

सह-प्राध्यापक

हिन्दी विभाग,

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,

अस्थल बोहर (रोहतक)

साहित्य समाज को एक दिशा प्रदान करता है। वह समाज की समस्याओं, समाधान व नवाचार से संबंधित होता है। समाज की इन सभी क्रियाओं के केन्द्र में मुख्यतः पुरुष और नारी होते हैं। यह बात अलग है जितना भी साहित्य लेखन है उसमें पुरुष का वर्चस्व ज्यादा दिखाई देता है। समय के साथ इसमें बदलाव भी आया है कि नारी ऐसी शक्ति का रूप है जो अपनी समझ व सूझ-बूझ के आधार पर परिवार का कल्याण करती है उसी नारी के लिए समाज द्वारा कुछ कठोर निर्णय लिये जाते हैं। ऐसे निर्णय जो उसको आगे बढ़ने में बाध्य पैदा करते हैं। इसके बावजूद परिवार व समाज की गरिमा को बनाए रखने के लिए अपना प्रत्येक कर्तव्य निभाती है किसी भी समस्या को समस्या की नजर से नहीं बल्कि समाधान के नजरिये से देखती है। अपने जीवन में आने वाली हर चुनौती का दृढ़ता से सामना करती है। सूर्यबाला जी ने अपने उपन्यासों में त्याग व आत्मसमर्पण का भाव रखने वाली नारी के अलग-अलग रूपों की विवेचना की है। नारी का अबला नहीं सबला रूप दिखाई देता है।

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य समाज का एक विशेष आधार है जो प्रत्येक तथ्य की बारीकी से अध्ययन कर उसे समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन अलग-अलग विधाओं के माध्यम से देखने को मिलता है जैसे कहानी, उपन्यास व नाटक आदि। लेखन की अलग-अलग विधाओं में नारी लेखन संकुचित था। प्रत्येक युग में नारी की स्थिति अलग ही दिखाई देती है। एक युग ऐसा भी था जिसमें नारी की पूजा की जाती थी वही दूसरी ओर एक दौर ऐसा भी था जिसमें नारी को केवल भाग मात्र समझा जाता था। नारी का अस्तित्व कम व पुरुष का अस्तित्व ज्यादा यह पितृसत्तात्मक समाज का रूप प्रस्तुत करता है। "पितृसत्ता का अर्थ एक पुरुष समाज में हर परिवार और सामाजिक संरचना में पिता के शासन से है। पिता अपने घर के सदस्यों पर संपूर्ण अधिकार रखता है और बदले में अपने परिवार के सदस्यों को आर्थिक सहयोग व सुरक्षा देने के लिए प्रतिबद्ध होता है।"¹ समाज में नारी अपने अस्तित्व की पहचान को लेकर प्रत्येक दौर से गुजरी है बदलते समय व परिस्थिति के आधार पर नारी की स्थिति में भी सुधार होने लगा। साहित्य लेखन में नारी की भूमिका दिखाई देने लगी। अनेक लेखकों ने अपने लेखन का आधार नारी को बनाया। जिससे नारी की स्थिति का वर्णन अलग-2 विधाओं के माध्यम से किया जाने लगा। प्रारम्भ में उपन्यास विधा में नारी चित्रण का सूक्ष्म रूप दिखाई देता था। कुछ समय अन्तराल में उपन्यास के माध्यम से भी नारी की प्रस्तुति होने लगी। नारी को लेकर यह सुधार मुख्य रूप से प्रेमचन्द युग में देखने को मिला जिसमें नारी की उपेक्षा नहीं बल्कि एक उचित दर्जा दिलवाने की पहल की गई। यह पहल मुकाम तब बनी जब एक नारी मन ही मनोभावों को व्यक्त करने लगी। "एक नारी, नारी समाज की समस्याओं को जीतने अच्छे ढंग से प्रस्तुत कर सकती है, शायद पुरुष नहीं। यही कारण

इन लेखिकाओं को अपने समाज परिवेश को रूपायित करने में बहुत सफलता मिलती है।²

समाज में नारी की समस्या व उसके संघर्ष को नारी दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने की पहल सूर्यबाला जी ने भी की है। अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी के जीवन में आने वाली समस्या व उनके समाधान के लिए कैसे एक क्रान्तिकारी रूप धारण करती है।

अध्ययन का उद्देश्य

सूर्यबाला जी के उपन्यासों में चित्रित नारी के माध्यम से नारी अस्मिता का जानना है। प्राचीन समय से अब तक समाज में नारी को लेकर कैसी भी धारणा चली आ रही हो। इस तथ्य को समझना आवश्यक है कि वह कमजोर नहीं है। अपनी प्रतिभा व क्षमता से समाज में बदलाव लाने का जज्बा रखती है वह नारी है। अपने आत्मसम्मान की रक्षा करने के लिए अपनी आवाज बुलंद कर सकती है। ऐसी कोई परिस्थिति नहीं है जिसका मुकाबला नारी नहीं कर सकती है।

विषय विस्तार

सूर्यबाला एक प्रसिद्ध साहित्यकार है। उनकी प्रसिद्धि का आधार साहित्य की अनेक विधाओं के माध्यम से अपना लेखन प्रस्तुत कर समाज को एक दिशा प्रदान की है। समाज के प्रत्येक वर्ग की समस्याओं को काफी नजदीक से देखा है अपने शब्दों के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत कर वास्तविकता से परिचित करवाया है। समाज में नारी वर्ग की भी ऐसी अनेकों समस्याएं हैं जिनसे समय-समय पर प्रताड़ित होती रही है। प्रत्येक युग में अनेक लेखकों ने इन समस्याओं पर चर्चा की है। जब नारी समस्या पर एक नारी लेखक के द्वारा चर्चा की जाए तो भाव अधिक रोचक बन जाता है। "महिला उपन्यासों में दोनों पक्ष, उन पर हुए अन्याय षडयन्त्र शोषण के विरोध तेजस्विता व

विद्रोह का पक्ष वह मानना पड़ेगा कि महिला उपन्यास लेखन प्रमुखतः महिला के स्व अधिकार और अस्मिता के लिए प्रतिबद्ध प्रतीत होता है।³ इसी भावनात्मक तथ्य के अनुरूप हिन्दी साहित्य में महिला उपन्यासकारों ने भी अपना विशेष योगदान दिया है। साठोतरी काल की महिला उपन्यासकारों में सूर्यबाला जी का भी विशेष वर्णन मिलता है जिन्होंने अपने उपन्यासों में नारी की प्रत्येक समस्या को दिखाया है। अपनी समस्याओं के प्रति नारी का एक अलग ही रूप देखने को मिलता है। समस्याओं के आगे झुककर नहीं बल्कि डटकर परिस्थितियों का सामना करती है। प्रत्येक उपन्यास की नारी नारियों के लिए मिसाल पेश करती है।

70 के दशक में अपने लेखन की शुरुआत करते हुए पहला उपन्यास 'मेरे सन्धिपत्र' लिखा जो समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए है। इस उपन्यास ने साहित्य क्षेत्र में चरमोत्कर्ष का कार्य किया है। नारी के वैवाहिक जीवन की शुरुआत होती है। यह पल नारी के लिए एक सपने जैसा होता है। यदि परिस्थितियाँ आम शादी से अलग हो तो कैसे समंजस्य करना है इसका चित्रण प्रस्तुत किया गया है उपन्यास में। शिवा एक ऐसी नारी है जिसका वैवाहिक जीवन आम शदियों से बिल्कुल विपरीत है। फिर भी अपनी परिस्थितियों से घबराती नहीं बल्कि अपने आप से समझौता कर लेती है। अपनी नासमझ उम्र में द्वंद्व भरे जीवन से आत्मसात् कर लेती है। "शिवा का सौन्दर्य मेरी अपनी आस्था विश्वास का सौन्दर्य है। नारी सौन्दर्य की जो गरिमा मुझे अभिभूत करती रही है वही साकार रूप में शिवा। शिवा एक सच है लेकिन एक फूल की तरह नहीं, एक खुशबू की तरह जो मेरी संवेदना में इस तरह समाती चली गयी कि उसके अनुरूप एक फूल की अवतारणा मुझे करनी पड़ी।"⁴ देखने वाले के मन में घर कर जाती है। अपने मन से कौन अपना कौन पराया इस भाव से मुक्त होकर अप्रत्यक्ष रूप से मिले प्यार को

सहर्ष स्वीकार करती है। कुछ पाने की चाहत नहीं बल्कि अपने द्वारा प्रत्येक को खुशी देना चाहती है।

एक लड़की के लिए परिवार क्या होता है उसके प्रति उसकी क्या जिम्मेदारियाँ हैं समय से पहले ही समझ लेती है। इस जिम्मेदारी वाले भाव की अपेक्षा और अधिक बढ़ जाती है जब लड़की परिवार में बड़ी हो। अपनी खुशियों की परवाह न करते हुए परिवार की हर स्थिति से समझौता कर अपनी जिम्मेदारी निभाती है। उसी लड़की के लिए समाज एक नियमों का एक पैमाना तय करता है। उसी समाज में लड़की के साथ बलात्कार जैसी कोई घटना घटित होती है तो समाज उसी को दोषी मानता है। “बलात्कार याने एक स्त्री के स्त्रीत्व की मौत है। किसी पर भी दूसरों की इच्छा न होते हुए किया बल का प्रयोग बलात्कार है।”⁵ यह एक साधारण घटना नहीं होती है बल्कि एक विध्वंसकारी घटना है जिसका शिकार ‘सुबह के इतजार तक’ उपन्यास की पात्र मानू होती है। इसके बाद अपना संतुलन खो बैठती है। मानू अपनी स्थिति के सुधार करने के लिए फिर से आत्मविश्वास जगाती है। इस प्रकार अपने जीवन के अंतिम क्षण तक अपने को संवारने व अपने भाइयों को आगे बढ़ाने के लिए हर सम्भव कोशिश करती है।

एक नारी का जीवन अनेक द्वंद्व में उलझा होता है खासकर एक विवाहित नारी। अपने रिश्ते को कायम करने के लिए हर सम्भव कोशिश करनी पड़ती है। उसकी यह कोशिश आपसी रिश्ते को बनाए रखने के लिए अर्थात् पति-पत्नी का रिश्ता। यदि यह रिश्ता नाम का है तो जीवन नासूर बन जाता है। ‘यामिनी कथा’ उपन्यास की नारी ऐसा द्वंद्व भरा जीवन जीती है एक ऐसी शादी जिसमें प्यार नहीं है। उसके जीवन की दूसरी विडंबना भरी शुरुआत उसके विधवा जीवन के रूप में होती है साथ में उसका बच्चा जिससे वह बेदतहा प्यार करती है। जिसके साथ पाकर उसे कोई खुशी नहीं मिली उसको खोने के बाद का दुख उससे भी ज्यादा था विधवा होना। अपने जीवन के अनेक

दुखो को झेलते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करती है। इस दुख भरी स्थिति में जीवन साथी के रूप में अन्य पुरुष का आगमन होता है। इस स्थिति में भी पहुँचकर वह खुश नहीं हो पाती है। अब स्थिति वर्तमान में अतीत के दोहरे जाल में उलझ चुकी है। “पत्नि के रूप में किसी स्त्री को स्वीकारना और बेटे के रूप में किसी लड़के को दोनों दो अलग-अलग बातें हैं। पत्नि की जगह दूसरी स्त्री ले सकती है, बेटा तो सिर्फ अपना ही होता है।”⁶

एक नारी का सबसे दर्दनाक संघर्ष एक विधवा के रूप में होता है। वही विधवा नारी जब एक माँ के रूप में संघर्ष करती है तो उसे अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उस चुनौतीपूर्ण समय में ऐसे-ऐसे दौर से गुजरना पड़ता है जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की होगी। उस बच्चे को लेकर साथ में सपने संजोये थे उन्हें अकेले ही देखना पड़ रहा है। “एक ही हुलास थी उन्हें बच्चे को हाकिम बनाकर देखे सोचकर ही गजभर की छाती हो जाती थी। इसके बापू की राम रे कैसे घटाटोप बादल छा रहे हैं।”⁷

ऐसे ही अपनी पिछली बातों को याद करके जीती है। पहले और बाद की स्थिति में काफी अन्तर आ जाता है। ऐसा ही संघर्ष ‘अग्निपखो’ उपन्यास में जयशंकर की माँ का देखने को मिलता है। जयशंकर के पिता की मृत्यु के पश्चात् जिम्मेदारी का भार उसकी माँ के कंधों पर आ जाता है। एक संयुक्त परिवार में रहते हुए अपने बेटे को कामयाब बनाने के लिए हर संभव कोशिश करती है। इस प्रकार एक ऐसी नारी जो अपने विधवा जीवन को अभिशाप मान टूटकर बिखरती नहीं बल्कि अपने बेटे की ढाल बनकर उसके साथ खड़ी रहती है।

अपने संघर्षशील जीवन में नारी अपने अनेक किरदार निभाती है जैसे : माँ, बहन, बेटा, पत्नी आदि। भारतीय परम्परा में नारी अपने प्रत्येक किरदार का एक आदर्श रूप निभाती है। ऐसा ही आदर्श पत्नी का किरदार दीक्षांत उपन्यास में देखने को मिलता है।

जो एक आदर्श भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है। कुंती जा कि शर्मा सर की पत्नी है। प्रत्येक दुःखःद परिस्थिति में अपने पति के साथ खड़ी रहती हैं। शर्मा जी की मृत्यु के पश्चात भी उनके आत्म-सम्मान को ठेस नहीं पहुँचने देती है। अपने पति के बुरे वक्त के जिम्मेदार व्यक्तियों को उन्हें श्रद्धाजंलि नहीं देने देती है बल्कि उनका विरोध करती है। कुंती विधवा होकर परिस्थितियों के सामने झुकने के बजाए अपने परिवार का सहारा बनती है।

नारी अपने जीवन में अनेक परिस्थितियों को झेलती है इसके बावजूद भी हार नहीं मानती है। ऐसा आत्मसमर्पण व त्याग का भाव 'कौन देश को वासी' उपन्यास में वेणु को माँ का दिखाई देता है। जो अपने बच्चे को अच्छे संस्कारों से पोषित करती है।

निष्कर्ष :

सूर्यबाला ही के उपन्यासों में चित्रित नारी एक ऐसी नारी का चित्र प्रस्तुत करती है जो अपने जीवन में आने वाली समस्याओं के सामने झुकती नहीं है। जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर आने वाली परिस्थितियों का सामना हिम्मत के साथ करती है। नारी का लाचार व बेबस रूप नहीं बल्कि क्रान्तिकारी रूप देखने को मिलता है। समाज की अन्य नारियों के लिए मिसाल है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. शुभ्रा परमार, नारीवाद सिद्धान्त और व्यवहार, ओरियट ब्लैक स्वान, 2015
2. समीक्षा, अप्रैल – जून, 1976
3. डॉ० मृत्युजंय उपाध्याय : स्वातन्त्रोत्तर हिन्दी उपन्यास का स्वरूप, अमर प्रकाशन, 2004
4. डॉ० बसन्तकुमार माली : सूर्यबाला के कथा साहित्य में युगबोध विकास प्रकाशन, कानपुर, 2015



5. डॉ० व्यक्त किशन राव पाटिल : मैत्रयी पुष्पा के साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन
6. डॉ० बसन्तकुमार माली : सूर्यबाला के कथासाहित्य में युगबोध विकास प्रकाशन, कानपुर, 2015
7. डॉ० सरला शर्मा : सूर्यबाला के उपन्यासों का समग्र मूल्यांकन